फिर भी शर्म इनको मगर नहीं आती

रजा शास्त्री

यह आपदा है, पिकनिक नहीं

- वीवीआईपी राहत कार्यों में बन रहे हैं बाधा
- प्रशासनिक अफसर लग जाते जी-हुजूरी में

देहरादून। उत्तराखंड की आपदा ने पूरे देश को दहला दिया है। कोई प्रांत ऐसा नहीं है, जहां के लोग रुद्रप्रयाग और उत्तरकाशी के पहाड़ों पर लगे इन शवों के ढेर में न हों। हजारों की तादाद में तीर्थयात्री अब भी मौत के चंगुल में है, ऐसे में तबाही का नजारा देखने आने वाले वीवीआईपी की वजह से राहत कार्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा। प्रशासन के अधिकारी काम नहीं कर पा रहे। वीवीआईपी की सुरक्षा और जी-हुजूरी के चक्कर में आपदा पीड़ितों के परिजनों से बदसुलूकी हो रही है।

सोनप्रयाग के पास वीवीआईपी के काफिले के कुछ लोगों के पिछड़ जाने पर राहत कार्य रोक दिया गया। फोन पर एक पूर्व मुख्यमंत्री बार-बार प्रशासनिक और पुलिस अफसरों को लताड़ रहे थे। आपदा में घायल हरीवाला के टैक्सी ड्राइवर मनोहर ने बताया कि इस पर गुस्साए पुलिसकर्मी ने वायरलैस सेट जमीन पर दे मारा। गौरीकुंड में लाशों और तबाही का नजारा देखने आए वीआईपी हेलीकॉप्टर देखकर झारखंड की यात्री रामदेवी समझी की राहत कार्य वाले हैं। हेलीकॉप्टर के विंग की हवा से उड़ी टिन उसकी छाती में धंस गई और बेहोश होकर लुढ़क गई।

आईएमए के प्रदेश सचिव डा. डीडी चौधरी ने बताया कि टिन लगने से बेहोशी महिला का फौरन इलाज किया गया। वह हार्ट फेल की स्थिति में थी, उसे किसी तरह 'रिवाइव' किया गया। वीवीआईपी की आवाजाही के चक्कर में सहस्त्रधारा हेलीपेड और जौलीग्रांट एयरपोर्ट पर आपदा पीड़ितों के परिजनों से बदसुलूकी की गई।

सहस्त्रधारा हेलीपैड में बिना किसी पीड़ित को लिए हेलीकॉप्टर से आए मंत्री हरक सिंह से आक्रोश जताते लापता लोगों के परिजन।

अब आपदा क्षेत्रों से मानव तस्करी!

बच्चों को सीमा पार नेपाल पहुंचाने की सूचना से पुलिस अलर्ट

मनमीत रावत

- सोमवार को तीन घंटे फ्लैश की गई सूचना
- सीमाओं पर सघन चेकिंग अभियान शुरू

देहरादून। आपदा के बाद मानव तस्करी को भी अंजाम दिया जा रहा है। सैकड़ों की तादात में जिन बच्चों को 'मिसिंग' या उनकी 'मौत' मान लिया गया, उनमें कई को सीमा पार कराकर नेपाल पहुंचाया गया। शनिवार को सूचना पुलिस के आलाधिकारी को मिली तो हड़कंप मच गया। वायरलेस में करीब तीन घंटे तक सूचना फ्लैश करके सीमाओं पर सघन चेकिंग अभियान चलाने के निर्देश दिए गए।

आपदा में माता-पिता को खो चुके बच्चों पर एक और आपदा आई है। उन पर मानव तस्करों की नजर गढ़ गई है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, कई बच्चों को तस्कर बार्डर पार कराके नेपाल ले जा चुके हैं। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को जानकारी मिलने पर जिले की पुलिस को चेकिंग अभियान शुरू करने के निर्देश दिए गए। रुद्रप्रयाग में अनाथ हो चुके बच्चों के लिए अलग वाहन कर दून लाने की व्यवस्था की गई। मंगलवार शाम तक प्रशासन ने इन बच्चों को ऋषिकेश लाना था। लेकिन कई जगह रोड ब्लॉक हो जाने से बुधवार को इन्हें ऋषिकेश पहुंचाया जाएगा। पुलिस को सख्त निर्देश दिए गए हैं कि बच्चा अकेले मिले या किसी के साथ उसकी हर हाल में जांच की जाए। सीमाओं पर मंगलवार से ही चेकिंग अभियान शुरू कर दिया गया है। एसएसपी केवल खुराना ने बताया कि चेकिंग अभियान शुरू कर दिया गया है। ऋषिकेश को खासकर फोकस किया गया है। वहां पर हर संदिग्ध पर नजर रखी जा रही है।

मुर्गों के साथ आया बच्चा

देहरादून। एक ऐसा दृश्य जिसको देखकर कठोर से कठोर व्यक्ति भी रो गया। ऐसा हृदय विदारक दृश्य तब देखने को मिला जब रुद्रप्रयाग से एक मासूम मुर्गे ढाने वाले वाहन से ऋषिकेश पहुंचा। बच्चे के मां-बाप लापता हैं। पुलिस के पास पहुंचे बच्चे को कुछ नहीं पता कि उसके मां-पापा कहां हैं। उसे एक महिला कांस्टेबल ने गोद में उठाया तो बच्चा हंस पड़ा। यह देख सभी सुबकने लगे। यह हाल पुलिस अधिकारियों को पता चला तो उन्होंने तुरंत ऐसे बच्चों को लाने के लिए अलग व्यवस्था करने के आदेश दिए।

उत्तराखंड में आई दैवी आपदा से प्रभावित हुए क्षेत्रों का दौरा कर सहस्त्रधारा बाईपास स्थित हेलीपैड में बिना किसी पीड़ित को लिए आए कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत व उनका सामान ढोते पुलिसकर्मी।

हवाई उड़ान ले सकती है पहाड़ों की 'जान'

अमर उजाला ब्यूरो

- हेलीकाप्टरों की साउंड फ्रीक्वेंसी से दरक सकते हैं कच्चे पहाड़
- पहाड़ के इको सिस्टम के लिए भी मुनासिब नहीं हैं हवाई सेवाएं

देहरादून। हवाई उड़ानें पहाड़ों की 'जान' ले सकती हैं। इनकी साउंड फ्रीक्वेंसी से न केवल कच्चे पहाड़ दरक सकते हैं, बल्कि इको सिस्टम के लिए भी यह सेवाएं मुनासिब नहीं। वाडिया हिमालयन भू-विज्ञान संस्थान के ग्लेशियर विशेषज्ञ डा. डीपी डोभाल के अनुसार बड़ी मात्रा में उड़ानों से न केवल डस्ट जमा हो रहा है, बल्कि पहाड़ को बांधे रखने वाला मैटीरियल भी लूज हो रहा है। भविष्य में इसका नकारात्मक असर देखने को मिल सकता है।

उनकी मानें तो अभी तक भारी बारिश, भू-स्खलन समेत प्राकृतिक आपदाओं से जितना नुकसान हुआ है, वह सब केदारधाम से नीचे की तरफ हुआ है। केदारधाम को कभी नुकसान नहीं पहुंचा था। हवाई सेवाएं शुरू हुए अभी ज्यादा समय नहीं हुआ। इनकी वजह से पड़ने वाले नुकसान का आंकलन नहीं किया गया। उधर, केदार घाटी में आई आपदा से ग्लेशियरों पर किया जा रहा अध्ययन भी प्रभावित हो गया है। घाटी क्षेत्र में स्थित चोरबारी ग्लेशियर में वाडिया हिमालयन भू-विज्ञान संस्थान के ग्लेशियोलाजी सेंटर की ओर से से तीन टावर लगाए गए थे। इसमें से एक रामबाड़ा में लगाया गया था, जबकि दूसरा बेस कैंप में और तीसरा हाई कैंप में लगाया गया था। इनमें से रामबाड़ा वाला टावर बह गया है। बेस कैंप वाला टूट गया है, जबकि तीसरा टावर सुरक्षित है या नहीं, इस बात की कोई जानकारी नहीं मिल पाई है। मौसम के थोड़ा ठीक होते ही उसका पता लगाया जाएगा।